Ancient Vedic Mantras and Rituals

Shrimad Bhagavad Gita Chapter – 2 Shalok – 21 | श्रीमद् भगवदगीता अध्याय दो – श्लोक इक्कीस | PDF

अध्याय 2 – सांख्य योग

श्लोक 21

वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम् |
कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् || 21||

सरल हिंदी में भावार्थ

हे पार्थ (अर्जुन)!
जो मनुष्य इस आत्मा को अविनाशी, नित्य, अजन्मा और अव्यय जानता है,
वह यह कैसे सोच सकता है कि वह किसी को मार रहा है या किसी से मरवा रहा है?

जो व्यक्ति आत्मा के इस सत्य को समझ लेता है,
उसके लिए हिंसा, हत्या और मृत्यु का भय
केवल अज्ञान की कल्पना बनकर रह जाते हैं।

विस्तृत व्याख्या

महाभारत के युद्धभूमि में अर्जुन शोक, करुणा और भय से ग्रस्त हैं।
वे अपने ही स्वजनों को सामने देखकर अस्त्र उठाने में असमर्थ हो जाते हैं।
तब भगवान श्रीकृष्ण उन्हें आत्मा के शाश्वत सत्य का बोध कराते हैं।

इस श्लोक में श्रीकृष्ण अर्जुन से कहते हैं कि
जो पुरुष यह जानता है कि आत्मा कभी नष्ट नहीं होती,
न उसका जन्म होता है और न ही उसका क्षय,
वह किसी की हत्या कैसे कर सकता है?

श्रीकृष्ण यह स्पष्ट कर देते हैं कि
वास्तविक अर्थ में न तो कोई मारता है
और न ही कोई मारा जाता है।
क्योंकि मारने योग्य तो केवल शरीर है,
आत्मा नहीं।

शरीर नश्वर है,
लेकिन आत्मा अविनाशी है।
अतः हिंसा का अनुभव केवल शरीर तक सीमित है,
आत्मा उससे सर्वथा अछूती रहती है।

आत्मा और शरीर का भेद

श्रीकृष्ण अर्जुन को यह समझा रहे हैं कि
मनुष्य स्वयं को शरीर मान बैठता है,

इसी कारण वह जन्म और मृत्यु के भय में जीता है।

शरीर—

- जन्म लेता है
- बढ़ता है
- बूढ़ा होता है
- और अंत में नष्ट हो जाता है

लेकिन आत्मा—

- न जन्म लेती है
- न बदलती है
- न नष्ट होती है
- और न ही कभी समाप्त होती है

जो आत्मा को पहचान लेता है,
वह शरीर के नाश को भी
केवल एक परिवर्तन मात्र मानता है।

पदों का भावार्थ (शब्दार्थ सहित)

वेदाविनाशिनम् – जिसे नष्ट नहीं किया जा सकता

नित्यम् – जो सदा रहने वाली है

यः – जो व्यक्ति

एनम् – इस आत्मा को

अजम् – जो जन्मरहित है

अव्ययम् – जिसका कभी ह्रास नहीं होता

कथम् – कैसे

सः पुरुषः – वह ज्ञानी पुरुष

पार्थ – हे अर्जुन

कम् घातयति – किसे मारता है

हन्ति कम् – या किसे मरवाता है

गूढ आध्यात्मिक अर्थ

यह श्लोक कर्म और ज्ञान के अद्भुत संतुलन को दर्शाता है।
श्रीकृष्ण अर्जुन को यह नहीं कह रहे कि युद्ध छोड़ दो,
बल्कि यह सिखा रहे हैं कि
ज्ञानपूर्वक कर्म करो।

जब मनुष्य आत्मा को अविनाशी जान लेता है,
तब उसके भीतर कर्तापन का अहंकार समाप्त हो जाता है।
वह यह नहीं सोचता कि
"मैं मार रहा हूँ"
या
"मैं मरवा रहा हूँ"।

ऐसा व्यक्ति केवल
ईश्वर की इच्छा के अनुसार
अपने कर्तव्य का पालन करता है।

जो आत्मा को नहीं जानता,
वह शरीर को ही सब कुछ मान लेता है
और भय, शोक तथा मोह में फँस जाता है।

लेकिन आत्मज्ञान प्राप्त व्यक्ति जानता है कि
न आत्मा मार सकती है
और न मारी जा सकती है।

अर्जुन के लिए विशेष संदेश

अर्जुन का भ्रम यह था कि
वह अपने ही स्वजनों की हत्या करेगा।
श्रीकृष्ण उसका यह भ्रम तोड़ते हैं और कहते हैं—

"अर्जुन!
यदि तुम आत्मा को अविनाशी जानते हो,
तो फिर यह शोक किस बात का?"

युद्ध करना अर्जुन का कर्तव्य था,
और कर्तव्य से भागना
आत्मज्ञान नहीं, बल्कि मोह था।

श्लोक का जीवनोपयोगी संदेश

- आत्मा अमर है
- शरीर नश्वर है
- जन्म और मृत्यु केवल शरीर के धर्म हैं
- आत्मा सदा अटल और अविनाशी है

जो इस सत्य को जान लेता है,
वह—

- भय से मुक्त हो जाता है
- शोक से ऊपर उठ जाता है
- और जीवन को समत्व भाव से जीता है

आज के जीवन में श्लोक की सीख

आज मनुष्य तनाव, डर और असुरक्षा से घिरा हुआ है।
इसका मूल कारण यही है कि
वह स्वयं को केवल शरीर मानता है।
यदि वह यह समझ ले कि
वह आत्मा है,
तो जीवन की हर परिस्थिति
उसे कमजोर नहीं, बल्कि मजबूत बनाएगी।

निष्कर्ष

भगवद्गीता का यह श्लोक
मनुष्य को मृत्यु के भय से मुक्त करता है
और उसे धर्मपूर्वक कर्म करने की प्रेरणा देता है।

आत्मा को जानकर
कर्तव्य के मार्ग पर निर्भय होकर चलना ही
सच्चा ज्ञान है
और यही जीवन का परम उद्देश्य है।

RELATED ARTICLE

Chapter -2 Shalok – 19

Chapter -2 Shalok – 20

THANKS FOR READING

READ MORE RELIGIOUS CONTENT ON

vedicprayers.com

VEDIC PRAYERS